व्यवस्थाविवरण 22:8 (NKJV):
“जब तुम नया घर बनाओ, तब अपनी छत के लिए एक सरंडा बनाओ, ताकि कोई उससे गिरकर मर न जाए और तुम्हारे घर पर खून का अपराध न लगे।”

पुराने नियम में, भगवान ने इस्राएलियों को बहुत ही व्यावहारिक और आध्यात्मिक निर्देश दिए — जिसमें इस आदेश का भी समावेश था कि वे अपनी छतों के चारों ओर सुरक्षा की दीवार बनाएं। क्यों? क्योंकि कई घरों की छतें सपाट होती थीं, जहां लोग इकट्ठा होते थे, और बिना सरंडे के कोई गिरकर मर सकता था। ऐसी स्थिति में, भगवान घर के मालिक को खून का अपराधी ठहराएंगे।

लेकिन इसका हमारे नए नियम के विश्वासी होने से क्या संबंध है?

1. आपका जीवन एक निर्माणाधीन घर की तरह है

यीशु ने मत्ती 7:24-27 में सिखाया कि जो कोई भी उनके वचनों को सुनता और पालन करता है, वह उस बुद्धिमान पुरुष के समान है जिसने अपना घर चट्टान पर बनाया। बारिश आई, हवाएँ चलीं, लेकिन घर अडिग रहा। इसके विपरीत, मूर्ख ने घर रेत पर बनाया और वह गिर गया।

“इसलिए जो कोई भी मेरे इन वचनों को सुनकर उनका पालन करता है,
मैं उसे उस बुद्धिमान पुरुष के समान मानूंगा जिसने अपना घर चट्टान पर बनाया।” – मत्ती 7:24

यह हमें दिखाता है कि हमारा आध्यात्मिक जीवन घर बनाने जैसा है। आधार है उद्धार — यीशु मसीह में विश्वास। यदि आप सही आधार रखते हैं, तो आप स्थिरता और अनंत जीवन की ओर बढ़ रहे हैं।

लेकिन यीशु केवल आधार पर ही नहीं रुकते। घर को पूरा करना भी जरूरी है, जिसमें दीवारें, छत और सरंडे शामिल हैं — अंतिम सुरक्षा उपाय।

2. केवल निर्माण न करें — समझदारी से पूरा करें

व्यवस्था विवरण में लिखा है कि केवल आधार रखने या दीवार और छत लगाने पर रुकना पर्याप्त नहीं है। परमेश्वर ने इस्राएलियों को उनके घरों को सुरक्षित रूप से पूरा करने का आदेश दिया — सीमाएं बनाएं। आध्यात्मिक रूप से इसका मतलब है:

केवल उद्धार पाना ही काफी नहीं है। आपको अपने जीवन में सीमाएं तय करनी होंगी ताकि आप और दूसरों की सुरक्षा हो सके।

जब कोई विश्वास करने वाला सावधानी से नहीं चलता, तो वह न केवल खुद खतरे में पड़ता है बल्कि दूसरों को भी ठोकर खिला सकता है।

3. सरंडे क्रिश्चियन जीवन में सीमाओं का प्रतीक हैं

ये सुरक्षा दीवारें या सरंडे हमारे जीवन में पवित्रता और बुद्धिमानी की सीमाओं का प्रतिनिधित्व करते हैं:

हम कैसे कपड़े पहनते हैं

हम कहां जाते हैं

हम कैसे बोलते हैं

हम क्या सुनते हैं

हम क्या देखते हैं

हम किसके साथ मेल-जोल रखते हैं

पौलुस 1 कुरिन्थियों 8:9 में लिखते हैं:
“लेकिन सावधान रहो कि तुम्हारी यह स्वतंत्रता कमजोरों के लिए ठोकर का कारण न बने।”

और रोमियों 14:13 में:
“इसलिए हम एक दूसरे को न तलवारें, बल्कि इस बात का ध्यान
रखें कि हम किसी के लिए ठोकर या गिरने का कारण न बनें।”

जिस तरह बिना सरंडे के कोई छत से गिर सकता है, वैसे ही हमारे आध्यात्मिक सीमाओं की कमी दूसरों को पाप में गिरा सकती है।

4. हमें देखा जा रहा है

चाहे हम चाहें या न चाहें, अविश्वासी — और नए विश्वासी भी — हमें देख रहे हैं। पौलुस याद दिलाते हैं:

“तुम हमारे पत्र हो, जो हमारे हृदयों में लिखा हुआ है, सभी लोगों द्वारा जाना और पढ़ा जाता है।” – 2 कुरिन्थियों 3:2

आपका जीवन आपके शब्दों से अधिक जोर से प्रचार करता है।

अगर कोई आपको देखता है:

असभ्य कपड़े पहनते हुए और फिर भी कहता है कि वह बचा हुआ है

अधार्मिक संगीत सुनते हुए और फिर पूजा का नेतृत्व करते हुए

जुआ खेलते, शराब पीते, अपशब्द बोलते हुए — फिर भी मसीह की गवाही देते हुए

तो वे कह सकते हैं, “अगर यही ईसाई धर्म है, तो मैं इसे नहीं चाहता।” आप उस वजह बन सकते हैं कि वे मसीह को अस्वीकार कर दें।

यीशु ने गंभीर चेतावनी दी:

“पर जो कोई भी इन छोटे विश्वासियों में से किसी को पाप में गिराता है, उसके लिए अच्छा होगा कि उसका गर्दन में एक चक्की का पत्थर बाँध दिया जाए और वह समुद्र की गहराई में डूब जाए।” – मत्ती 18:6

5. भय और बुद्धिमानी के साथ अपना जीवन बनाएं

आइए सावधानी से जिएं। हमारा ईसाई जीवन केवल खुद को नर्क से बचाने का नहीं है, बल्कि दूसरों को भी परमेश्वर के राज्य में सुरक्षित ले जाने का है। इसका मतलब है:

व्यक्तिगत सीमाएं तय करें।

अपनी गवाही पर ध्यान दें।

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 6

शब्द और कर्म में सुसंगत रहें।

ईमानदारी से जीवन जियें।

दूसरों के लिए ठोकर या उपहास का कारण न बनें।

6. निष्कर्ष: अपने निर्माण के अंतिम चरण की उपेक्षा न करें

अच्छा आरंभ करना पर्याप्त नहीं है — आपको अच्छी तरह अंत करना होगा। कई लोग ईसाई जीवन शुरू करते हैं, लेकिन सभी टिक नहीं पाते। पौलुस ने कहा:

“पर मैं अपने शरीर को दबाकर रखता हूं, ताकि जब मैं दूसरों को प्रचार करूं, तो मैं स्वयं अस्वीकार्य न हो जाऊं।” – 1 कुरिन्थियों 9:27

अपने घर को पूरा करें। सरंडा बनाएं। सावधान रहें। अपने आचरण से दूसरों की रक्षा करें।

आपका उद्धार केवल आपके जीवन की नींव न होकर, आसपास के लोगों की सुरक्षा करने वाली सीमा भी बने।

प्रार्थना:
हे प्रभु यीशु, मुझे उद्धार की दौड़ केवल शुरू करने में नहीं, बल्कि उसे विश्वासपूर्वक अंत तक पूरा करने में सहायता करें। मुझे बुद्धिमानी से जीने की कृपा दें, पवित्रता में चलने की शक्ति दें, और कभी भी दूसरों के लिए ठोकर बनने न दें। मेरा जीवन आपकी महिमा करे। आमीन।

अगर चाहें, तो मैं इसका संक्षिप्त हिंदी संस्करण भी बना सकता हूँ। क्या आप चाहेंगे?

JIUNGE NA GROUP LETU LA WHATSAPP HAPA >> WHATSAPP GROUP….

Share on:
WhatsApp